P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-5* ISSUE-12*August- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika

भारत की विदेश नीति में गुटनिरपेक्षता : कल और आज

सारांश

भारत द्वारा स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद अमेरिका तथा सोवियत संघ दोनों महाशक्तियों के नेतृत्व में पनप चुके दो गुटों, पूँजीवादी तथा साम्यवादी से बचने तथा विश्व राजनीति में सक्रिय, स्वतन्त्र तथा निष्पक्ष भूमिका निभाने हेतु गुटनिरपेक्षता की नीति को अपनाया। वर्तमान में गुटनिरपेक्ष आन्दोलन में 120 राष्ट्र है, 17 शिखर सम्मेलन सम्पन्न हो चुके है। भारत इसके निर्धारक राष्ट्रों में से एक प्रमुख राष्ट्र है। इसके सभी सम्मेलनों में भाग लिया तथा 1983 के सातवें शिखर सम्मेलन की मेजबानी भी की, 1971 की भारत–रूस मैत्री सन्धि तथा 2005 के भारत–अमेरिकी असैन्य परमाणु समझौते के समय भारत की गुटनिरपेक्ष नीति पर प्रश्न चिन्ह आरोपित हुए परन्तु भारत ने स्पष्ट किया कि वह आज भी इसमें रूचि रखता है परन्तु राष्ट्रीय हितों की अनदेखी नहीं जा सकती है।

मुख्य शब्द : शीत युद्ध, महाशक्तियाँ, गुटनिरपेक्षता, शिखर सम्मेलन, सहभागिता, प्रासंगिकता, राष्ट्रीय सुरक्षा, विदेश नीति, राष्ट्रीय हित, वैश्विक राजनीति, व्यवस्था, द्विपक्षीय सम्बन्ध, सुरक्षा, निःशस्त्रीकरण।

प्रेमलता परसोया
सह–आचार्य,
राजनीति विज्ञान विभाग,
राज. कला कन्या
महाविद्यालय,
कोटा (राज.)

प्रस्तावना

भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतान्त्रिक राष्ट्र है तथा विश्व शान्ति स्थापना तथा शान्तिपूर्ण सह–अस्तित्व की नीति में विश्वास रखने वाला देश है। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद विश्व में दो गुटों का उदय अमेरिका तथा सोवियत संघ के नेतृत्व में हुआ। भारत ने इन गुटों से दूर रहने तथा विश्व राजनीति में सक्रिय भूमिका निभाने हेतु गुटनिरपेक्षता की नीति अपनाई तथा नवोदित एशिया, अफ्रीका के राष्ट्रों ने भी इस नीति को अपनाया। इस नीति के समर्थक राष्ट्रों ने वैश्विक मुद्दों पर अपनी प्रतिक्रिया खुलकर व्यक्त की। भारत की विदेश नीति का भी प्रमुख आधार गुटनिरपेक्षता ही है। शीत युद्ध के अन्त के बाद इसकी प्रासंगिकता पर तथा भारत की निष्ठा पर प्रश्न चिन्ह खड़े किए गए, इसका अध्ययन इसमें किया गया है।

समस्या का चयन

गुटनिरपेक्षता का जन्म शीत युद्ध जनित परिस्थितियों में हुआ था परन्तु अब शीत युद्ध खत्म हो चुका है तथा गुटों का अस्तित्व भी नहीं बचा तथा वैश्वीकरण ने दुनिया की भौगोलिक दूरियों को भी खत्म कर दिया है। भारत गुटनिरपेक्ष आन्दोलन के प्रमुख राष्ट्रों में शुमार रखता है। 2016 के 17वें शिखर सम्मेलन में प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी के नहीं जाने पर भारत की नीयत पर शंका हुई। इसमें यह अध्ययन किया जायेगा की भारत क्या आज भी गुटनिरपेक्ष नीति पर कायम है अथवा नहीं ?

अध्ययन का उदेश्य

भारत की विदेश नीति, खासकर गुटनिरपेक्षता की नीति, उसके विकास, चुनौतियों का वर्तमान सन्दर्भ में अध्ययन तथा राष्ट्रीय हितों के साथ सम्न्वय स्थापित करके वैश्विक गतिविध्यिों में सहभागिता का अध्ययन करना। क्या भारत आज भी गुटनिरपेक्ष नीति पर चलता है या ये अतीत की बात हो चुकी है, इसका अध्ययन करना।

साहित्यावलोकन

भारत की विदेश नीति व गुटनिरपेक्षता पर कई अध्ययन हुए इनमें से उपलवध साहित्य का अवलोकन किया है। शोध के क्षेत्र में सम्बन्धित पुस्तकों, पत्रिकाओं, समाचार पत्रों आदि का अध्ययन किया है। पीटर विलेट्स – द नॉन अलाइनमेंट मूवमेंट, एच.एम. वाजिद – इण्डिया एण्ड द नॉन अलाइनमेंट मूवमेंट, के.एस. पवित्र – नॉन अलाइनमेंट मूवमेंट, मनोरमा चतुर्वेदी – गुटनिरपेक्ष आन्दोलन – बदला परिदृश्य, आशुतोष कुमार – भारतीय विदेश नीति, पी.पी.जी. एच. प्रकाशन, 2018, द नॉन अलाइनमेंट मूवमेंट एण्ड कोल्ड वार : देहली – बाण्डुंग – बेलग्रेड, संपादन नतासा मिस्कोविक हैराल्ड फिशरटिन नदा

बस्कोवस्का, पब्लिश बाई रॉटलेज, (2017), ए टू जेड ऑफ द नॉन अलाइनमेंट मूवमेंट एण्ड थर्ड वर्ल्ड, बाई – जी. अर्नोल्ड, प्रकाशक – स्क्रूक्रो, 2010

अध्ययन पद्धति

उक्त रिसर्च पेपर में दूरदर्शन पर विदेश नीति तथा अनतर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के विशेषज्ञों की चर्चा जैसे प्राथमिक स्त्रोत तथा अध्ययन विषय से सम्बन्धित विभिन्न पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं, रिसर्च आर्टीकल्स जैसे द्वितीयक स्त्रोतों का प्रयोग किया गया है।

भारत की स्वतन्त्रता तथा शीत युद्ध का आविर्भाव विश्व में लगभग समानान्तर ही हुआ था इसलिए स्वतन्त्र भारत की विदेश नीति के निर्धारण में शीत युद्ध कालीन वैश्विक परिस्थितयों का आवश्यक रूप से प्रभाव पड़ा। 1945 के बाद से ही विश्व में अमेरिका तथा सोवियत संघ के नेतृत्व में पूँजीवादी एवं साम्यवादी गुटों का न सिर्फ जनम हुआ अपितु इन गुटों ने अपने गुट की मजबूती एवं संख्या वृद्धि के अनेक प्रयत्न करने शुरू कर दिये। आर्थिक विकास एवं सुरक्षा की गारण्टी इनके प्रलोभनों में सर्वाधिक महात्वपूर्ण थे। एशिया–अफ्रीका तथा लेटिन अमेरिका के राष्ट्र धीरे–धीरे स्वतन्त्र होने लगे थे तथा स्वतन्त्र होते ही इन्हें द्विध्रुवीय व्यवस्था से मुखातिब होना पड़ा। इन राष्ट्रों के समक्ष दो रास्ते थे, यथा – (i) दोनों में से किसी एक गुट में शामिल हो जाते, तो इनको आर्थिक विकास एवं राष्ट्रीय सुरक्षा जैसी महत्वपूर्ण जिम्मेदारी से काफी हद तक निजात मिल जाती, (ii) दोनों ही गुटों से दूर रहकर अपनी स्वतन्त्र पहचान बनाते और वैश्विक गतिविधियों में निष्पक्ष भमिका निभाते। प्रथम मार्ग यद्यपि सरल था परन्तु नवोदित तीसरी दुनिया के राष्ट्र एक लम्बे राष्ट्रीय संघर्ष के बाद प्राप्त स्वतन्त्रता को किसी गुट में शामिल होकर नहीं खोना चाहते थे। किसी भी गुट में सम्मिलित होने का अर्थ यही था कि अपनी विदेश व अन्तर्राष्ट्रीय नीति को संरक्षक राष्ट्र को सौंप देना। भारत व तीसरी दुनिया के राष्ट्र स्वतन्त्र विदेश नीति का निर्धारण तथा क्रियान्वयन इच्छुक थे इसलिए इन्होनें दोनों ही गुटों से दूर रहकर स्वतन्त्र रूप से वैश्विक मामलों में सक्रिय भूमिका निभाने का निश्चय किया

भारत के नेहरू, यूगोस्लाविया के मार्शल टीटो, इण्डोनेशिया के सुकर्णो, मिस्त्र के नासिर और घाना के क्वामे एनक्रूमा के नेतृत्व में नवोदित स्वतन्त्र राष्ट्रों ने दोनों गुटों से दूर रहने के लिए गुटनिरपेक्ष आन्दोलन का गठन किया। इस पाँचों के कार्यों को '' पाँचों की पहल शक्ति'' कहा गया।[1] यद्यपि विश्व स्तर पर ये कयास लगाये गये थे कि भारत, पश्चिमी गुट में सम्मिलित होगा क्योंकि पश्चिमी मूल्यों और संस्कृति का प्रभाव अपनिवेशवाद के दौरान अवश्यक स्थापित हुआ होगा। दूसरी तरफ ये भी कयास लगाया गया कि भारत कृषि प्रधान देश तथा अन्य समानताएँ सोवियत संघ से मिलती है अतः अब भारत सोवियत गुट में सम्मिलित हो जायेगा परन्तु भारत द्वारा अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षार्थ दोनों ही गुटों से दूर रहने का निश्चय किया। भारत, एशिया महाद्वीप में नेतृत्वकारी भूमिका में स्वतन्त्रता पूर्व से ही था और अब गुटों की गुटबन्दी से नवोदित एशियाई अफ्रीकी राष्ट्रों को बचाने में भी अहम भूमिका निभाई। 7 दिसम्बर 1946 को नेहरू ने संविधान सभा को सम्बोधित करते हुए अपनी असंलग्नता की नीति इन शब्दों में स्पष्ट की थी – ''जहाँ तक सम्भव होगा, शक्तिशाली गुटों से दूर रहने का प्रयत्न किया जायेगा''।[2]

भारत ने आजादी प्राप्ति के बाद अपनी विदेश नीति के निर्धारण में गुटनिरपेक्षता को आधार बनाया। भारत, वास्तव में चाहता था कि एशियाई, अफ्रीकी राष्ट्रों की विश्व में महत्ता बढ़े तथा ये देश दोनों महाशक्तियों के बीच सेतुबन्ध बनकर विश्व शान्ति की स्थापना में प्रमुख भूमिका निभाएँ। दोनों ही महाशक्तियों को भारत के आचरण से निराशा हुई तथा गुटनिरपेक्षता की नीति का उनके द्वारा मजाक भी उड़ाया गया कि 'गुटों से अलग' कोई नीति नहीं हो सकती और गुटनिरपेक्ष राष्ट्र भी धीरे–धीरे हमारे साथ संलग्न हो जायेंगे। भारत की रूचि सदैव से एशिया तथा अफ्रीका की एकता स्थापना तथा विकास में रही हैं। भारत में भी दो प्रकार के वर्ग बन गये थे, एक वर्ग चाहता था कि भारत, अमेरिका जैसे शक्तिशाली देश के सथ सम्बद्ध हो जाए, जिससे कि भारत का आर्थिक पुनर्निर्माण शीघ्रता से हो सके जबकि दूसरा वर्ग चाह रहा था कि सोवियत संघ से हमारी आधारभूत विचारधारा मिलती है, इसलिए उसके गुट में शामिल होना भी समझदारी होगी। परन्तु भारत द्वारा गुटनिरपेक्षता की नीति को अपनाना एक चुनौतीपूर्ण टास्क था, फिर भी हमने वह मार्ग चुना जिसके द्वारा स्वतन्त्र और सक्रिय भूमिका विश्व के मामलों में निभा सके। भारत पर यह आरोप भी लगा कि वह विश्व में सक्रिय भागीदारी नहीं निभाना चाहता। नेहरू जी ने इस पर कहा था कि दुनिया के मानचित्र पर भारत की स्थिति ऐसी जगह है कि भारत चाहते हुए भी वैश्विक मामलों से दूर नहीं रह सकता तथा दुनिया भी भारत के महत्व की अनदेखी नहीं कर सकती।

नेहरू ने 1949 में अमेरिकी कांग्रेस में बोलते हुए कहा यदि कहीं पर स्वतन्त्रता संकट में पड़ेगी या न्याय को खतरा होगा या कहीं आक्रमण किया जायेगा तो हम न तो तटस्थ रह सकते है और न रहेंगें। हमारी नीति तटस्थवादी नहीं है, बल्कि यह ऐसी नीति है जो सक्रिय रूप से शान्ति स्थापित करने और उसे मजबूत आधार देने की नीति है।[3] नेहरू ने यह भी कहा था कि यदि हम तीसरा विश्व युद्ध रोकना चाहते है तो उसके लिए गुटनिरपेक्षता जैसी नीति आवश्यक हैं जो कि निष्पक्ष रूप से दोनों महाशक्तियों के बीच मध्यस्थता की भूमिका निभायेगी।

भारत द्वारा गुटनिरपेक्षता नीति क्यों ?

गुटनिरपेक्षता की नीति भारत की नई नीति नहीं थी अपितु भारत की विदेश नीति के मुख्य सिद्धान्त यथा विश्व शान्ति तथा शान्तिपूर्ण सह–अस्तित्व, पंचशील की नीति, उपनिवेशवाद, सामाज्यवाद का विरोध, पड़ौसी राष्ट्रों से मैत्रीपूर्ण सम्बनध आदि गुटनिरपेक्षता की नीति अपनाने के आधार कहे जा सकते है। यदि भारत द्वारा गुटों से जुड़ने की नीति अपनाई जाती तो वैश्विक तनावों में वृद्धि होती, जो कि अन्ततः विश्व युद्ध का कारण बनती, ये हमारी आधारभूत सोच से विपरित हमें ले जाती, इसलिए

गुटनिरपेक्षता के आधार पर हमने हमारी विदेश नीति की नींव रखी और ये हमारी विदेश नीति का सबसे प्रमुख तत्व बन गई। भारत द्वारा गुट निरपेक्षता की नीति अपनाने के कतिपय कारण निम्नानुसार कहे जा सकते हैः–

1. भारत को शीत युद्ध से बचाना हमारी पहली प्राथमिकता थी, अन्यथा दक्षिण एशिया शीत युद्ध का अखाड़ा बन सकता था।
2. आर्थिक विकास की महत्वाकांक्षा भी गुटनिरपेक्षता की नीति अपनाने का कारण कही जा सकती है क्योंकि उपनिवेश कालीन शोषण से उबरने के लिए भारत दोनों ही महाशक्तियों से सहायता प्राप्त कर सकता था अन्यथा एक गुट में शामिल होने पर दूसरे से सदैव के लिए विमुख होना पड़ता।
3. स्वतन्त्र विदेश नीति का संचालन करना भी इसकी आधार बना। भारत किसी गुट में शामिल होकर अपनी सम्प्रभुता के सथ समझौता नहीं करना चाहता था।
4. विश्व में शान्ति स्थापना में रूचि भी हमारी गुटनिरपेक्षता की नीति अपनाने का कारण है क्योंकि अब परमाणु शक्ति सम्पन्नता के साथ यदि विश्व युद्ध होगा उसको आंकलन करने हेतु भी किसी के बचने की संभवना नहीं लगती।
5. भारत अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में सक्रिय रूप से जिम्मेदारियाँ निभाने का इच्छुक हैं, किसी गुट में शामिल होने पर संरक्षक राष्ट्र के स्वर का अनुसरण मात्र ही करना पड़ता।

इसके अतिरिक्त भारत क्षेत्रफल तथा जनसख्या में क्रमशः विश्व में सातवें एवं दूसरे स्थान पर आता हैं। अपनी विशालता व प्रतिष्ठा के कारण वह किसी गुट में शामिल नहीं हो सकता था। जैसा कि मेनन ने कहा है – '' विश्व शान्ति को छोडकर यहाँ बहुत से ऐसे तत्व थे, जिसने नेहरू को गुटनिरपेक्षता की नीति अपनाने को विवश किया। भारत किसी दूसरे देश पर आश्रित होने के लिए काफी बड़ा था। औद्योगिक रूप से एवं ऐतिहासिक रूप से वह शक्तिशाली भी था।''[4] भारत पर महाशक्तियों, खासकर अमेरिका द्वारा यह भी आरोप लगाया गया कि वह दोनों गुटों के अलावा तीसरा गुट निर्मित करना चाहता है परन्तु भारत ने प्रारम्भ से ही स्पष्ट कर दिया था कि वह गुटों की राजनीति से दूर रहना चाहता है तो गुट के निर्माण की बात बिल्कुल असंगत है। गुटनिरपेक्षता तो शान्तिपूर्ण उद्देश्यों के लिए हमारा संकल्प है और सामाज्यवाद, उपनिवेशवाद, नव उपनिवेशवाद, रंग–भेद, गरीबी, बेरोजगारी, विश्व में गहराता आर्थिक अन्तराल आदि वैश्विक समस्याओं के विरूद्ध संघर्ष कर समाधान खोजना हमारा लक्ष्य होगा।

भारत द्वारा यह नीति अकस्मात् नहीं अपनाई बल्कि यह तो वर्षों से हमारे व्यवहार और आदतों का हिस्सा रही है। भारत हमेशा से 'जीओ और जीने दो' के सिद्धान्त पर अमल करता आया है तथा स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद भी पड़ौसी पाकिस्तान की नापाक हरकतों के बावजूद उसके साथ उदारतापूर्ण व्यवहार अपनाकर विश्व शान्ति स्थापना में अपनी नीति का परिचय दे दिया है। परमाणु ताकत प्राप्ति की राह पर चल पड़ी महाशक्तियों की राह के खिलाफ तथा निःशस्त्रीकरण के प्रयत्नों के लिए भारत ने भरसक कोशिश की है। गुटनिरपेक्ष आनदोलन के माध्यम से भारत ने तीसरी दुनिया के राष्ट्रों की आवाज सशक्त करके, विश्व मंच पर अभिव्यक्त करवाना चाहता था तथा आपसी समस्याओं के समाधान हेतु उचित विचार–विमर्श के लिए भी सार्थक मंच प्रस्तुत करना चाहता था। जब अमेरिका द्वारा यह प्रचारित किया गया कि भारत, तीसरे गुट के निर्माण की तैयारी में है तो कृष्णा मेनन द्वारा इसे स्पष्ट करते हुए कहा था'' मेरी समझ में यह तृतीय गुट नहीं है क्योंकि गुट का अर्थ शक्ति से है। तृतीय गुट के पास किसी भी गुट से कम से कम ढ़ाई गुनी शक्ति होनी चाहिए। लेकिन ऐसा कभी नहीं होगा और यदि ऐसा होता है तो वह मानव जाति के लिए घातक होगा।''[5]

गुटनिरपेक्ष आन्दोलन के विकास में भारत

1947–1977: गुटनिरपेक्ष आन्दोलन के विकास में भारत की सदैव सक्रिय व सकारात्मक भूमिका रही तथा स्वतन्त्र व निष्पक्ष निर्णय लेकर अपनी छवि विश्व के समक्ष पेश की। 1949 में चीन में साम्यवादी क्रान्ति के बाद चीन को मान्यता प्रदान करना, भारत की निर्भीकता का प्रतीक ही था। इसी तरह 1950 के कोरिया युद्ध के समय उत्तरी कोरिया को आक्रमणकारी घोषित किया परन्तु यू.एन.ओ. के नेतृत्व में दक्षिण कोरिया को 38वीं अक्षाक्षं रेखा को पार करने से मना किया, क्योंकि इससे चीन के युद्ध में उतरने की पूरी संभावना थी और चीन के शामिल होते ही कोरिया युद्ध विश्व युद्ध में बदल जाता, जो कि भारत कभी नहीं चाहता था।

1962 का भारत–चीन युद्ध

1962 में भारत की गुटनिरपेक्षता की असली परीक्षा की घड़ी आ गई, जब चीन ने अचानक से सोची–समझी रणनीति के तहत् भारत पर बहुत बड़े पैमाने पर आक्रमण कर दिया। भारत, वास्तविक स्थिति समझने में मात खा चुका था, अब कयास यह लगने लगा कि भारत किसी भी सैन्य गुट व महाशक्ति से सहायता प्राप्त करने के लिए सांठगांठ करेगा क्योंकि गुटनिरपेक्ष राष्ट्र किसी भी प्रकार से भारत की सहायता करने में समर्थ नहीं थे। भारतीय नेतृत्व को पहली बार अहसास हुआ कि हम हमारे बनाये हुए एक कृत्रिम वातावरण में जी रहे है, जबकि राष्ट्रों का आन्तरिक व बाहरी आचरण अलग–अलग होता है।

चीन ने ''हिन्दी–चीनी, भाई–भाई'' के जुमले में भारत को इस कदर फंसाया कि हम वास्तविकता के धरातल से पृथक हो गये तथा काल्पनिक–आदर्शी वातावरण को ही सच समझ बैठे। वास्तव में हमारी विदेश नीति असफलता ही सिद्ध हुई क्योंकि चीन, ने भारत के बहुत बड़े भाग पर कब्जा करके इकतरफा युद्ध विराम भी घोषित कर दिया। अमेरिका की भारत–चीन युद्ध पर कड़ी नजर थी कि कहीं साम्यवादी सोवियत संघ बन्धुत्व निभाने की दृष्टि से चीन के पक्ष में युद्ध मैदान में न उतर जाए। हालांकि सावियत संघ बिल्कुल निष्पक्ष रहा और चीन की आक्रामकता को भांपते हुए अमेरिका ने उसे चुनौती दी कि

यदि वह अपने निर्णय से पीछे नहीं हटा तो अमेरिका, भारत के पक्ष में युद्ध में शामिल हो जायेगा। यहीं नहीं कि अमेरिका ने केवल धमकी मात्र ही दी हो बल्कि बंगाल की खाड़ी में अपना सातवां जहाजी बेड़ा भी भेज दिया।

भारत की गुटनिरपेक्षता पर इस समय सवाल उठाये गए कि उसने अमेरिकी गुट में शामिल होकर उक्त नीति का परित्याग कर दिया है। परन्तु भारत सरकार द्वारा यह स्पष्ट कर दिया कि भारत को बिना किसी सैन्य शर्त या आधार के अमेरिका द्वारा यह सहायता पहुँचाई है इससे भारत की गुटनिरपेक्षता की नीति पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। अपनी राष्ट्रीय सुरक्षा जैसे महत्वपूर्ण हितों की रक्षा के लिए बिना शर्त सहायता लेना किसी भी राष्ट्र का अधिकार है और भारत ने भी ऐसा ही किया है।

भारत–सोवियत संघ मैत्री सन्धि

भारत–पाक युद्ध 1965 के बाद सोवियत संघ से भारत के द्विपक्षीय सम्बन्धों में प्रगाढ़ता आने लगी थी और सावियत संघ की मध्यस्थता से ही ताशकन्द समझौता सम्पन्न हुआ था। 1971 में भारत और सोवियत के मध्य 20 वर्षीय मैत्री सन्धि सम्पन्न हुई। इससे, सबसे पहले अमेरिका परेशान हुआ और भारत की यह कहकर आलोचना करने लगा कि वह अपने आधारभूत सिद्धान्तों, मूल्यों से पृथक हो गया है और सोवियत खेमें में दस्तक दे चुका है। भारत की गुटनिरपेक्ष नीति पर प्रश्न चिन्ह लगना स्वाभाविक था। इसी समय पूर्वी पकिस्तान का स्वतन्त्रता संग्राम, जो गृह क्लेश से शुरू हुआ था, अब भारत–पाक युद्ध में तब्दील हो चुका था। इसमें सोवियत संघ की सहानुभूति भारत के प्रति रही परन्तु हमने उससे कोई सैन्य सहायता नही ली थी। भारत पर लगे आरोपों का जवाब देते हुए भारत ने कहा कि वह अब भी विश्वस्तर पर अपनी स्वतन्त्र विदेश नीति का निर्वहन करेगा तथा किसी भी महाशक्ति को अपनी भूमि सैन्य उपयोग हेतु नही देगां। यह मित्रता की सन्धि है, जिससे किसी नीति व सिद्वान्त का त्याग परिलक्षित नही होता है तथा किसी भी राष्ट्र को मित्रतापूर्ण सम्बंधो का निर्माण करना उसका अधिकार है, इस पर कोई बन्धन वह स्वीकार नहीं कर सकता है। वह सदैव तीसरी दुनिया के राष्ट्रो के साथ खड़ा रहेगा और अन्र्राष्ट्रीय मामलों का निष्पक्ष अवलोकन करके सदैव सही के पक्ष मे अपना निर्णय देगा ।

सत्ता परिवर्तन

स्वतन्त्रता प्राप्ति के 30 साल बाद पहली बार केन्द्र में गैर कांग्रेसी सरकार मोराजी देसाई के नेतृत्व में अस्तित्व में आई। इस जनता पार्टी की सरकार ने अपने चुनावी एजेण्डे में अन्य बातों के साथ 'सच्ची गुट निरपेक्षता' का उल्लेख किया था। इस सच्ची गुटनिरपेक्षता की वास्तविकता जानने की उत्सुकता राष्ट्रीय तथा अन्र्राष्ट्रीय दोनो ही स्तरों पर थी। 1977 में ही एकबार विदेश मन्त्री अटल बिहारी वाजपेयी ने स्वयं ही गुट निरपेक्षता पर सवाल उठाकर उसका जवाब दिया। जवाब में कहा ''भारत को न केवल गुटनिरपेक्ष रहना चाहिये, बल्कि वैसा दिखाई भी पड़ना चाहिये। यदि हम कोई ऐसी बात कहें या करें जिससे ऐसा मालूम पड़े कि हम किसी एक खेमें की तरफ झुके हुए है तथा अन्तर्राष्ट्रीय मामलों की गुणावगुण के आधार पर तय करने के हमारे सार्वभौम अधिकार को तेज कर रहे है तो यह गुट निरपेक्षता के सीधे किन्तु कठिन मार्ग से विचलित होना ही माना जाएगा। जनता सरकार ऐसा कभी नही होने देगी।''6

जनता सरकार की उक्त नीति को अमेरिका ने अपने पक्ष का समझा तथा यह भी माना कि भारत अब पूर्ववर्ती वैदेशिक व अन्तर्राष्ट्रीय नीतियों पर पुनर्विचार के बाद ही निर्णय लेगा परन्तु देसाई सरकार ने यह भी स्पष्ट कर दिया कि हम भारत की परम्परागत गुट निरपेक्षता को छोड़ेंगे नही वरन् अनवरत् यह नीति जारी रहेगी।

भारत की गुटनिरपेक्ष आन्दोलन की मेजबानी

7–12 मार्च, 1983 तक गुटनिरपेक्ष आन्दोलन के सातवें शिखर सम्मेलन की मेजबानी भारत ने स्वीकार की। यह सम्मेलन भारत की राजधानी नई दिल्ली में आयोजित हुआ था। अध्यक्षता, भारत की प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी ने की थी तथा अगले समिट तक के लिए उन्हे निर्गुट आन्दोलन का अध्यक्ष बनाया गया। अध्यक्ष इन्दिरा गाँधी ने पड़ौसी देश अफगानिस्तान में विदेशी हस्तक्षेप को समाप्त करने की अपील की क्योंकि इससे एशिया महाद्वीप शीत युद्ध की गिरफ्त में आ रहा था। निःशस्त्रीकरण हेतु सक्रिय वसमान कदम उठाने की बात कही, कि अस्त्र–शस्त्रों पर अनावश्यक खर्च से सम्बन्धित राष्ट्रों की जनता के कल्याणपरक कार्यो मे कटौती की जाती है, जो अन्ततः उस राष्ट्र के लिये घातक साबित होती है। इन्दिरा गाँधी ने सभी राष्ट्रो से विश्वशान्ति तथा शान्ति पूर्ण सह–अस्तित्व के मार्ग पर चलने की अपील भी की।

इस सम्मेलन में अमीर व गरीब देशों के बीच बहुत अधिक अन्तराल खत्म करने और आर्थिक समानता पर आधारित नई अन्तर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था निर्माण के प्रस्ताव पारित किए गए। ईरान तथा इराक में मध्यस्थता के लिए समिति गठित करने की बात की गई। विश्व के पर्यावरण की रक्षा तथा आतंकवाद की समस्या के उचित समाधान पर विचार–विमर्श हुआ। इसके अतिरिक्त पश्चिम एशिया, इथोपिया–सोमालिया, वियतनाम–आसियान आदि विवादों पर भी चर्चा की गई। इस समय निर्गुट आन्दोलन के सदस्यों की संख्या 101 हो गई थी। इन्दिरा गाँधी द्वारा अपने उद्बोधन में अन्तर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के पुननिर्माण की बात कही तथा विश्व में सभी तरह के भेदभावो व शोषण को खत्म करने की बात भी रखी। विकासशील राष्ट्रो द्वारा अपने स्तर पर भी आर्थिक प्रयत्न जोर–शोर से करने की बात इन्दिरा गाँधी कही गई। विकाशील देशो के बीच बैंक तथा सूचना केन्द्र स्थापना का विचार भी रखा गया।

शीत युद्वोत्तर विश्व में भारत व गुट निरपेक्षता

1991 में सोवियत संघ के विघटन के बाद दुनिया से एक साम्यवादी गुट खत्म हो गया और परिणाम स्वरूप शीत युद्व का भी अन्त हो गया। शीत युद्व के अन्त के विश्व में स्वाभाविक ही सकारात्मक परिणाम सामने आये। इसी के साथ यह प्रश्न भी उभरने लगा कि जिस नीति अर्थात् गुटनिरपेक्षता का जन्म ही गुटों से बचने एवं दूर रहने के लिए हुआ था, आज गुटों के खत्म होने पर गुटनिरपेक्षता का अस्तित्व भी समाप्त हो जाना चाहिए।

सम्पूर्ण विश्व स्तर एवं गुटनिरपेक्ष राष्ट्रों के बीच भी यह शंका उत्पन्न होने लगी कि अब गुट–निरपेक्ष आन्दोलन समाप्ति की आरे है और शीघ्र ही यह समाप्त हो जायेगा।

भारत द्वारा इसके स्पष्टीकरण में कहा गया कि निर्गुट आन्दोलन का आविर्भाव बेशक शीत युद्व के दौर में निर्मित गुटों से बचने या दूर रहने के लिए हुआ था परन्तु इसके लक्ष्य तथा उद्देश्य भी निर्गुट राष्ट्रों द्वारा निर्धारित किए गए थे। आज गुट खत्म हो गये होंगे, परन्तु विकासशील राष्ट्रो द्वारा प्राप्य उद्देश्य अभी प्राप्त किया जाना शेष है। और इनकी प्राप्ति तक इस संगठन के खत्म हो जाने की बात करना बेमानी है। सह निर्गुट राष्ट्रों की आपसी समस्याओं पर विचार–विमर्श करने लिए महत्वपूर्ण मंच है तथा इसके द्वारा व वैश्विक संस्थाओं तथा संगठनों में तृतीय विश्व अपनी आवाज मजबूती रख सकता है।

1992 में जापान की राजधानी टोकियों मे नरसिंह राव ने अपना भाषण देते हुए कहा – ''पहले की तुलना में गुनिरपेक्षता की नीति का औचित्य आज और भी महत्वपूर्ण है। जब तक राष्ट्रो की दादागिरी चलती रहेगी भारत गुट निरपेक्षता की नीति को अपनाये रहेगा।''[7] भारत ने अपना दृष्टिकोण व्यक्त किया कि जब तक विकसित और विकासशील राष्ट्रो के मध्य आर्थिक विकास के अन्तर की गहरी खाई बनी रहेगी, निःशस्त्रीकरण का लक्ष्य प्राप्त करना शेष रहेगा, पर्यावरण सुरक्षा बढ़ाना तथा आतंकवाद को खत्म करना जैसे मुद्दे शेष रहेंगे, सयुंक्त राष्ट्र संघ में जनसख्या के अनुपात में राष्ट्रो का सुरक्षा परिषद में प्रतिनिधित्व नहीं होगा, गुटनिरपेक्ष आन्दोलन और अधिक प्रसांगिक बना रहेगा। नव–उपनिवेशवाद आज विकासशील तथा अविकसित राष्ट्रों पर आधिपत्य स्थापित करने का एक ऐसा तरीका बन गया है जो उपरी तौर पर नजर नही आता है परन्तु वास्तव में खरनाक होता है। भारत का तर्क ये भी था कि अभी एक गुट ही खत्म हुआ है, दूसरा बचा है जो कि विश्व में एकमात्र सुपर पॉवर बनकर शक्ति सन्तुलन के सिद्वान्त को ही चुनौती देगा। इसके सन्तुलन में निर्गुट आन्दोलन प्रमुख भूमिका निभा सकता है। निर्गुट राष्ट्र संख्या बल के आधार पर अपनी स्थिति वैश्विक राजनीति में मजबूत कर सकते है। भारत के शीर्ष नेतृत्व द्वारा इसके शिखर सम्मेलनों में सहभागिता निभाई गई।

1998 में भारत ने अपनी राष्ट्रीय सीमाओं की सुरक्षा को पड़ौसियों की चुनौती के मद्देनजर 1974 के बाद पॉच परमाणु परीक्षण ओर किए और परमाणु ताकत सम्पन्न राष्ट्रो के समकक्ष आ खड़ा हुआ। यद्यपि भारत ने अभी भी यह बात दोहराई कि वह इन परमाणु शस्त्रों का प्रयोग अपनी तरफ से पहले नही करेगा परन्तु पड़ौसी राष्ट्र द्वारा युद्व थोपा गया तो प्रत्युत्तर में वह किसी सीमा का ध्यान नही रखेगा। भारत के परमाणु परीक्षणों पर निर्गुट राष्ट्रो में भी चिन्ता की लहर दौड़ गई कि अब भारत का रूचि विकासशील राष्ट्रो की समस्याओं की ओर नही रहेगी अपितु वह विकसित राष्ट्रों के साथ अपने सम्बन्धों को तरजीह देगा।

भारत ने निर्गुट राष्ट्रो को आश्वस्त किया कि वह इस नीति से दूर नहीं गया है और न जाएगा स्वंय की राष्ट्रीय सीमाओं की सुरक्षा के प्रति जागरूक होना आवश्यक है और भारत के अतीत के कटु अनुभवों को भी भुलाया नहीं जा सकता है। वह गुटनिरपेक्ष राष्ट्रों की समस्याओं के समाधान में पूरी रूचि रखता है तथा इसके लिए सक्रिय प्रयत्न भी करेगा। हाँ कमी भारत–पाक, कश्मीर जैसे द्विपक्षीय मुद्दों को इस मंच पर उठाने का प्रयास किया गया तो अवश्य भारत ने कहा कि यह मंच द्विपक्षीय मुद्दों की उलझन का केन्द्र नहीं बनना चाहिए अपितु सकारात्मक प्रयत्न यहाँ से किए जाने चाहिए। भारत के परमाणु परीक्षण के बाद 1999 में दक्षिण अफ्रीका में निर्गुट आन्दोलन के 12वें शिखर सम्मेलन में भारतीय प्रधानमंन्त्री अटल बिहारी वाजपेयी ने अनेक शंकाओं का जवाब देकर अपना पक्ष रखा।

अटल बिहारी वाजपेयी ने शीत युद्धोपरान्त अन्तर्राष्ट्रीय परिवेश में गुटनिरपेक्षता की नीति का खुलकर समर्थन किया तथा उनकी मान्यता थी कि इस संगठन के माध्यम से एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र के साथ सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक रूप से जुड़कर आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने में सक्षम होगा। वाजपेयी को जहॉ भी, जैसा भी अवसर मिला गुटनिरपेक्षता की नीति का जोरदार शब्दों में समर्थन किया, जिससे कि शक्तिशाली राष्ट्रों की किसी भी क्षेत्र में दादागिरी न चल सके।[8] इस दौर में विश्व का पूर्ववर्ती समस्याओं के साथ आतकंवाद ने अपनी कुत्सित्, भयानक प्रवृति विश्व स्तर पर फैलाने की कोशिश की तथा विश्व के सभी मंचों के माध्यम से इसको जड़ से खत्म करने के प्रयासों पर चर्चा होने लगी। अप्रैल, 2000 में कार्टगेना में निर्गुट राष्ट्रों के विदेश मन्त्रियों के सम्मेलन में तत्कालीन भारत के विदेश मन्त्री जसवंत सिंह ने भाग लिया और इसी महत्ता पर प्रकाश डालने के साथ ही इसकी चुनौतियों की चर्चा भी कि, जिससे कि इसकी एकता को बनाये रखा जा सके। एम.एस. राजन ने भी भारत की गुट निरपेक्षता तथा 'नाम' के बने रहने के बारें में कहॉ था कि जब तक की प्रभुता सम्पन्न राज्यों की व्यवस्था होगी ओर विश्व व्यवस्था में समानता के आधार पर कार्य स्वरूप में अन्तर नहीं आ जायेगा तब तक गुटनिपेक्षता की प्रासंगिकता नही रहेगी।

भारत–अमेरिका सैन्य समझौता व उसके बाद गुटनिरपेक्षता

21 वीं सदी में भारत द्वारा वैश्वीकरण की प्रक्रिया के तहत् आर्थिक सुधारों के लिए उदारता तथा निजीकरण की नीति अपनाई गई तो पश्चिमी राष्ट्र विशेषकर अमेरिका को बहुत अच्छा लगा और धीरे–धीरे भारत–अमेरिका द्विपक्षीय सम्बन्धों में सुधार की प्रक्रिया प्रारम्भ हुई। दोनों के आर्थिक–व्यापारिक सम्बन्धों का ग्राफ ऊपर की ओर बढ़ने लगा।

2005 में भारत–अमेरिका के बीच असैन्य परमाणु समझौता सम्पन्न हुआ तो भारत की गुटनिरपेक्ष नीति पर आक्षेप लगे कि अब तो उसने अपने आपको अमेरिका के साथ सलंग्न करके अपनी मूलभूत नीति को बदल दिया है। भारत अब अमेरिका के अनुसार अपनी सभी तरह की नीतियॉ निर्धारित करेगा। यहाँ तक कि सोवियत संघ को

भी अपने पुराने मित्र भारत की नीयत पर शंका उत्पन्न हुई और वह पाकिस्तान की तरफ रूख करने लगा। भारत ने अपना दृष्टिकोण स्पष्ट किया कि वह अब भी गुटनिरपेक्ष नीति में पूर्ण विश्वास करता है तथा इस संगठन की प्रासंगिकता बराबर बनी रहेगी। परन्तु यह भी सत्य है कि किसी भी राष्ट्र की विदेश नीति का लक्ष्य उसके राष्ट्र हितों की पूर्ति करना ही होता है जिसके लिए वह प्राथमिक तौर पर पने स्तर अपने प्रयास करता है तथा पूर्णता के अभाव में अन्य राष्ट्रो के सहयोग की ओर देखता है।

भारत–अमेरिका असैन्य परमाणु समझौता भी हमारे राष्ट्र हितो की प्राप्ति के प्रयत्नों का परिणाम ही था। चूँकि भारत, ऊर्जा खपत के दृष्टिकोण से विश्व में तीसरे–चौथे स्थान पर आता है और ऊर्जा प्राप्ति के परम्परागत संसाधन अब समाप्ति की ओर है तथा ऊर्जा स्त्रोतो की वैकल्पिक व्यवस्था हमारे पास नहीं है। इसलिए अमेरिका से अपनी ऊर्जा आवश्यकताओं की पूर्ति करना चाहता है और खास बात यह है कि ये समझौता भारत अमेरिका के बीच समान स्तर पर किया गया है इसमें किसी प्रकार की सर्वोच्चता–अधीनता की स्थिति नही हैं इसके अलावा हमने अभी भी अमेरिका को हमारी भूमि, सैन्य उपयोग के लिए नहीं दी है और इस समझौते में सैनिक आक्रमण का कोई प्रावधान नहीं है। भारत ने कहा कि वह अपनी विदेश नीति पर किसी बाहरी प्रतिबन्ध व आधिपत्य को सहन नहीं करेगा बल्कि स्वतंत्र एवं निष्पक्ष रूप से इसका निर्माण तथा क्रियान्वयन करेगा। राष्ट्रीय हितों के अनुसार मित्रता का दायरा यदि बढ़ाना पड़े तो वह गलत नहीं होता अपितु समय की मांग के अनुसार परिवर्तन अपनाने को आतुर रहना स्वस्थ राष्ट्र व सुदृढ़ विदेश नीति का प्रमाण कहा जा सकता है।

भारत ने अपनी गुट निरपेक्षता में आस्था को 2006 में उस समय साबित किया, जब संयुक्त राष्ट्र महासभा तथा गुटनिरपेक्षता के शिखर सम्मेलन में से प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने यू.एन.ओ. के स्थान पर निर्गुट सम्मेलन में जाना स्वीकार किया। इस सम्मेलन में मनमोहन सिंह ने अपने सम्बोधन में कहा कि आज आधुनिकता, विवेक तथा संस्कृतियों के बीच एक सामन्जस्य स्थापित करने की आवश्यकता है जिससे सभ्यताओं के बीच उत्पन्न टकराव को रोका जा सके। निर्गुट आन्दोलन के राष्ट्रों की संख्या आज 120 है तथा इसके 17 शिखर सम्मेलन भी आयोजित हो चुके है। भारत का दृष्टिकोण है कि जब तक उत्तर एवं दक्षिण के राष्ट्रो के बीच असमानता विद्यमान रहेगी, परमाणु हथियारों का ढ़ेर विश्व में कायम रहेगा, आतंकवाद रूपी सांप अपना फन फैलाए रहेगा तब तक गुटनिरपेक्ष आन्दोलन जैसे मंच सार्थक विचार–विमर्श तथा उचित समाधान खोजने हेतु प्रासंगिक बने रहेंगे।

17वां शिखर सम्मेलन और भारत की गुट निरपेक्षता

निर्गुट राष्ट्रों का 17 शिखर सम्मेलन 13–18 सितम्बर 2016 तक वेनेजुएला के कराकस शहर में (मार्गारिटा द्वीप) आयोजित हुआ। इस सम्मेलन में भारत का प्रतिनिधत्व उपराष्ट्रपति हामिद अन्सारी ने किया, नरेन्द्र मोदी किसी कारणवश नहीं जा पाये। इस पर निर्गुट राष्ट्रो नें भारत के लिए कहॉ कि अमेरिका से सुदृढ़ होते सम्बन्धों के कारण इस सम्मेलन में प्रधानमंत्री ने सहभागिता नहीं कि। 2016 से पूर्व 1979 में एक ओर अवसर आया था जब प्रधानमन्त्री चौधरी चरण सिंह गुटनिरपेक्ष आन्दोलन के शिखर सम्मेलन में भाग लेने नहीं पहुॅचे थे। 2016 में प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी का नाम सम्मिट में नहीं जाना, नाम के प्रति भारत की अरूचि समझा गया।

यद्यपि भारत के प्रतिनिधि हामिद अंसारी ने अपना दृष्टिकोण स्पष्ट किया कि नरेन्द्र मोदी का नहीं आना भारतीय विदेश नीति में बदलाव का संकेत नही है। यह प्रधानमन्त्रियों का सम्मेलन नही है। महत्वपूर्ण बात किसी भी संगठन में सहभागिता की होती है और इसमें भारत की सक्रिय सहभागिता रही है। भारत ओर अमेरिका के बीच बढ़ती साझेदारी का यह परिणाम नही है अपितु वह हमारे राष्ट्रीय हितों की मांग का परिणाम हैं इस आन्दोलन का महत्व बना हुआ है। हामिद अंसारी ने आतंकवाद को खत्म करने के मुद्दें तथा सुरक्षा परिषद् के लोकतन्त्रीकरण की आवश्यकता पर बल दिया। भारत का पक्ष था कि सुरक्षा, सार्वभौमिकता तथा विकास के समक्ष आतंकवाद आज सबसे बड़ी चुनौती व समस्या बना हुआ है और किसी राष्ट्र द्वारा इसको संरक्षण दिया जाता तो अर्न्तराष्ट्रीय समुदाय द्वारा इसकी निंदा की जानी चाहिए। भारत ने कहॉ कि अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति तथा आतंकवाद एक साथ नही चल सकते है। भारत आज भी हर सगंठन व मंच में अपना विश्वास रखता है।

निष्कर्ष एवं सुझाव

अन्ततः हम सकते है कि गुटनिरपेक्षता भारत की विदेश नीति का महत्वपूर्ण आधार रही है तथा भारत इसके निर्धारक पॉच राष्ट्रो का अगुवा व नेतृत्वकारी भूमिका वाला राष्ट्र भी कहा जा सकता हैं। भारत ने इसके सिद्वान्तों तथा लक्ष्यों में पूर्ण आस्था रखी है तथा अपने व्यवहार में क्रियान्वित भी किया है। इस मंच के माध्यम से महत्वपूर्ण वैश्विक मुदों के सार्थक विचार–विमर्श में भारत सदैव सहभागी रहा है तथा यू एन ओ तथा अन्य अन्तर्राष्ट्रीय संगठनो पर संख्या बल के आधार पर अपनी बात रखी तथा मनवाने का प्रयास भी हुआ है। भारत ने इस मंच के माध्यम से नवीन अन्तर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की स्थापना तथा उत्तर–दक्षिण के बीच की गहरी खाई को पाटने जैसे महत्वपूर्ण मुद्दे इसमें उठाये है। सभी शिखर सम्मेलनो तथा विदेश मन्त्री सम्मेलनों में सहभागिता भी निभाई। अनेक अवसरों यथा 1962 में भारत–चीन युद्व, 1971 में भारत–रूस मैत्री सन्धि, भारत–अमेरिका असैन्य परमाणु समझौता, 2005 आदि पर भारत की गुटनिरपेक्षता की नीति पर प्रश्न चिन्ह लगाये गये तथा 17वें शिखर सम्मेलन में नरेन्द्र मोदी के नहीं जाने पर यह आरोप लगा कि भारत–अमेरिका के बीच बढ़ती सांझेदारी के कारण भारत के प्रधानमन्त्री ने इसमें भाग नही लिया है, परन्तु भारत ने अपना दृष्टिकोण स्पष्ट कर दिया की किसी राष्ट्र से मैत्री सम्बन्ध इस नीति में आड़े नही आने चाहिये। आज आवश्यकता इस बात की है गुटनिरपेक्षता को विस्तृत दायरे में समझने तथा पुनर्परिभाषित करने की आवश्यकता है। इसका जन्म शीत युद्ध के दौर में तीसरे

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-5* ISSUE-12*August- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

विश्व युद्व को रोकने के प्रयत्नों के फलस्वरूप हुआ था, परन्तु आज गुटों की समाप्ति के बाद राष्ट्रो के बीच बहुपक्षीय सम्बन्धों का विकास हो रहा है तथा किसी भी नीति द्वारा राष्ट्रीय हितों की पूर्ति को बाधित नहीं किया जाना चाहिए। इस मंच को एक सकारात्मक चिन्तन के लिए खोल दिया जाना चाहिए। जिसमें विकसित तथा विकासशील, सभी राष्ट्रों के शामिल होने पर कोई प्रतिन्बध नहीं होना चाहिए। आज यह संगठन एक नये स्वरूप में परिवर्तित करने की आवश्यकता है, जिसमें नकरात्मक के स्थान पर सकारात्मक कुछ करने की आवश्यकता है। भारत आज भी इसमें रूचि रखता है परन्तु परमाणु ऊर्जा प्राप्ति सहित अनेक राष्ट्रीय हितों की पूर्ति के लिए उसे जहॉ भी सम्पर्को का दायरा बढ़ाने की जरूरत हो, बढायेगा तथा अन्य सभी राष्ट्र भी ऐसा कर सकते है। हॉ तीसरी दुनिया की पहचान बनाने वाला यह प्रमुख संगठन है तथा बना रहेगा बस आवश्यकता है उदार दृष्टिकोण से इसे देखने की।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *तपन बिस्वाल –अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध ओरिएण्ट ब्लैकस्वान, हैदराबाद, 2018, पृष्ठ – 145*
2. *पवन कुमार – भारत की विदेश नीति, ओमेगा पब्लिकेशन, नई दिल्ली, पृष्ठ – 23*
3. *डॉ. मुनेष कुमार –भारत की विदेश नीति, डिस्कवरी पब्लिशिंग हाऊस,नई दिल्ली, पृष्ठ 35*
4. *शीला ओझा– भारतीय विदेश नीति, भाग – 1 श्याम प्रकाशन, जयपुर, पृष्ठ – 11*
5. *मनोरमा चतुर्वेदी– गुटनिरपेक्ष आन्दोलन : बदलता परिदृश्य, अंकुर प्रकाशन, उदयपुर, पृष्ठ – 21*
6. *वेद प्रताप वैदिक – भारत की विदेश नीति, हिन्दी माध्यम कार्यावन्यन निदेशालय, नई दिल्ली पृ. 63*
7. *बी.सिंह. गहलोत – भारत की विदेश नीति*
8. *आर.के.खिलनानी – स्ट्रक्चरिंग इण्डियन फॉरेन पॉलिसी कॉमनवेल्थ पब्लिशर, पृष्ठ संख्या – 130*
9. *आशुतोष कुमार – भारतीय विदेश नीति, पी.पी.जी.एच. प्रकाशन, 2018*
10. *द नॉन अलाइनमेंट मूवमेंट एण्ड कोल्ड वार : देहली – बाण्डुंग – बेलग्रेड, संपादन नतासा मिस्कोविक हैराल्ड फिशरटिन नदा बस्कोवस्का, पब्लिश बाई रॉटलेज, (2017)*
11. *ए टू जेड ऑफ द नॉन अलाइनमेंट मूवमेंट एण्ड थर्ड वर्ल्ड, बाई – जी. अर्नोल्ड, प्रकाशक – स्क्रूक्रो, 2010*
12. *अन्य – वर्ल्ड फोकस पत्रिका, राजस्थान पत्रिका, दैनिक भास्कर, इण्डियन एक्प्रेस..........आदि इन्टरनेट, वेबसाइट्स। विदेश मन्त्रालय के वार्षिक प्रतिवेदन।*